रिकार्डः- निर्बल से लड़ाई बलवान कीः-   ओमशान्ति   प्रातःक्लास   30-12-67

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप रोज़2 पहले समझाते हैं कि अपन को आत्मा समझ बैठो और बाप को याद करो। कहते हैं ना अटेन्शन प्लीज़। तो बाप कहते हैं एक तो अटेन्शन दो बाप के तरफ। बाप कितना मीठा है। उनको कहा जाता है प्यार का सागर। ज्ञान का सागर तो तुमको भी बहुत प्यारा बनना है। मन्सा वाचा कर्मणा। हर बात में तुमको खुशी बहुत रहनी चाहिए। कोई को भी दुःख न देना है। बाप भी किसको दुःखी नहीं करते। बाप आये ही हैं सुखी करने लिए। तुमको भी कोई प्रकार का किसको दुःख नहीं देना है। कोई भी ऐसा कर्म नहीं करना चाहिए। मन्सा में भी न आना चाहिए। परन्तु यह अवस्था पिछाड़ी में होगी। कुछ न कुछ कर्म इन्द्रियों से भूल होती है। अपन को आत्मा समझेंगे दूसरे को भी आत्मा भाई समझेंगे तो फिर किसको दुःख नहीं देंगे। शरीर ही नहीं देखेंगे तो दुःख कैसे देंगे। इसमें गुप्त मेहनत है। यह सारा बुद्धि का काम है। अभी तुम पारस बुद्धि बन रहे हो। तुम जब पारस बुद्धि थे तो बहुत तुम ने सुख देखा। तुम ही सुखधाम के मालिक थे ना। यह है दुःखधाम। यह तो बहुत सिम्पूल है। वह है हमारा स्वीट होम। फिर वहाँ से पार्ट बजाने आये हैं। दुःख का पार्ट बहुत समय बजाया है। अब सुखधाम चलना है इसलिए सब को भाई2 समझना है। आत्मा आत्मा को दुःख नहीं दे सकती। अपन को आत्मा समझ आत्मा से बात कर रहे हैं। आत्मा ही तख्त पर विराजमान है। हम उन पर बैठी हैं। यह भी शिव बाबा का रथ है ना। बच्चियाँ कहती हैं हम शिव बाबा के रथ को श्रृंगारती हैं। शिव बाबा के रथ को खिलाते हैं। तो शिव बाबा ही याद रहता है। वह है ही कल्याण कारी बाप। बाप कहते हैं मैं 5 तत्वों का भी कल्याण करता हूँ। वहाँ कोई भी चीज़ कब तकलीफ नहीं देती। यहाँ तो कब तुफान, कब ठंडी कब क्या होती है। वहाँ तो सदैव बहारी मौसम रहती है। दुःख का नाम ही नहीं। वह है ही हेविन। बाप आते हैं तुमको हेविन का मालिक बनाने। ऊँच ते ऊँच भगवान है। ऊँच ते ऊँच बाप, ऊँच ते ऊँच सुप्रीम टीचर भी है। तो जरूर ऊँच ते ऊँच ही बनावेंगे ना। तुम यह (ल०ना०) थे। यह सभी बातें भूल गये हो। भक्ति मार्ग में कितना घोर-अँधियारे में मनुष्य है। अँधियारे में ठोकरे खाये कितने दुःखी होते हैं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। ऋषियों, मुनियों आद से पूछते थे आप रचता और रचना को जानते हो तो नेती2 कह देते थे। जब कि उनके पास ही ज्ञान न था तो फिर परम्परा कैसे चल सकता। बाप कहते हैं यह ज्ञान अब ही मैं तुमको देता हूँ। सदगति हो गई फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं। दुर्गति होती नहीं। सतयुग को कहा ही जाता है सदगति। यहाँ है दुर्गति। परन्तु यह भी किसको पता नहीं है कि हम दुर्गति में पड़े हैं। बाप के लिए ही गाया जाता है लिबरेटर गाईड, खेवईया। विषय सागर से सबकी नईया पार लंघाते हैं। उसको कहते हैं क्षीर सागर। विष्णु को भी क्षीर सागर में दिखाते हैं। यह सब है भक्ति मार्ग का ज्ञान। बड़ा2 तालाब है विष्णु का बड़ा2 चित्र दिखाते हैं। बाप समझाते हैं तुम ने ही सारे विश्व पर राज्य किया है। अनेक बार हार खाई और जीत पहनी है। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। तो खुशी रहनी चाहिए ना। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो परन्तु कमल फूल समान पवित्र रहो। अभी तो तुम काँटों से फूल बन रहे हो। समझ में आता है यह सब फॉरेस्ट आफ थार्नस है। एक दो को कितना तंग करते हैं। मार देते हैं। तो बाप मीठे2 बच्चों को कहते हैं तुम सब की अभी वानप्रस्त अवस्था है। छोटे बड़े सब की वानप्रस्त अवस्था है। तुम वाणी से परे जाने लिए पढ़ते हो। बाप कहते हैं सभी की वाणप्रस्त अवस्था है। फिर यह रसम भक्ति मार्ग में चलती है। 60 वर्ष के बाद गुरु करते हैं। तुमको अब मिला है सदगुरु। वह तो वानप्रस्त में तुमको ले ही जावेंगे। यह है युनिवर्सिटी। भगवानुवाच है ना। मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। फिर राजाओं का राजा बनाता हूँ। जो पूज्य राजाएँ थे वही फिर पुजारी राजाएँ बने हैं। तो बाप कहते हैं बच्चे अच्छी रीत पुरुषार्थ करो। दैवीगुण धारण करो। भल खाओ पीओ... श्रीनाथ द्वारे में जाओ तो वहाँ घी के माल ढेर मिलते हैं। घी के कुएँ बने हुये हैं। वह सब फिर खाते कौन हैं? पुजारी।

श्रीनाथ और जगत नाथ दोनो काले हैं। जगत नाथ के मंदिर में बाबा ने कहा था बहुत गंदे चित्र देवताओं के हैं। अभी वह चित्र हैं या गवर्मेन्ट ने बन्द कर दी हैं यह कोई जाये देख आवे। कलकत्ते के नजदीक हैं कटक। देख कर आवेंगे सर्विस भी कर के आवेंगे। कलकत्ते वाले को ही डायरेक्शन मिलती हैं। वहां चावल का हन्ब" बनाते हैं। जो पक जाने से चार भाग हो जाती हैं। सिर्फ चावल का ही भोग लगता हैं। क्योंकि अभी साधारण हैं ना। उस तरफ गरीब इस तरफ शाहुकार। अभी तो देखो कितनी गरीबी हैं। खाने को भी नहीं मिलता हैं। सतयुग में तो सब कुछ हैं। तो बाप आत्माओं को हो बैठ समझाते हैं। शिव बाबा बहुत मीठा हैं। वह तो हैं निराकार। प्यार आत्मा को हो किया जाता हैं। शरीर तो जल गया। उनकी आत्मा को ही बुलाते हैं। ज्योत जगाते हैं। इससे सिध हैं आत्मा का अंधियारा होता हैं। आत्मा है ही शरीर रहित। तो फिर अंधियारे आद की बात कैसे हो सकती। वहां यह बातें होती नहीं। यह हैं सब भक्ति मार्ग। आत्मा को अंधियारा कैसे होगा। वह तो एक शरीर छोड़ जाये दूसरा लेती हैं। तो बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। ज्ञान बहुत मीठा2 हैं। इसमें आंखें खोलकर सुनना चाहिए। बाप को तो देखेंगे ना। तुम जानते हो शिव बाबा यहां विराजमान है। तो आंखें खोलकर बैठना चाहिए ना। आंखें बन्द कर बैठते हैं तो गांया धूंधकारी हैं। बेहद के बाप को देखना चाहिए ना। आगे बच्चियां बाबा को देखने से हो ध्यान में चली जाती थी। आपस में भी बैठे ध्यान में चली जाती थी। आंखें बन्द और दोड़तर रहती थी? कमाल तो थी ना। बाप समझाते रहते हैं एक दो को देखते हो तो ऐसे समझो हम भाई आत्मा से बात करते हैं। भाई को समझाते हे तुम बेहद के बाप की राय नहीं मानेंगे। तुम यह अंतिम जन्म पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। बाबा बहुतों को समझाते हैं। कोई तो फट से कह देते हैं बाबा हम जरूर पवित्र बनेंगे। पवित्र रहना तो अच्छा हैं। कुमारी पवित्र हैं तो सब उनको माथा टेकते हैं। शादी करती हैं तो पुजारी बन पड़ती हैं। सभी को माथा टेकना पड़ता हैं। तो प्युरिटी अच्छी हैं ना। प्युरिटी है तो पीस प्रोस्पर्टी भी हैं। सारा मदार पवित्रता पर हैं। बुलाते भी हैं हे पतित-पावन आओ। पावन दुनिया में रावण होता नहीं। वह हैं ही राम-राज्य। सभी क्षीरखन्ड रहते हैं। धर्म का राज्य हैं फिर रावण कहां से आया। रामायण आद कितना प्रेम से बैठ सुनाते हैं। यह सब हैं झूठ। झूठ में मनुष्यों को कितना मज़ा आता हैं। कहा जाता हैं सच्च तो बिठो नच। बाबा आते हैं तो बच्चियां डांस करने लग पड़ती हैं। यह हैं खेल-पाल। इसमें कुछ हैं नहीं। कोई कोई को संशय आ जाता था इसलिए बन्द कर दिया। विघ्न तो पड़ते हैं ना। सच्च की बेड़ी का गायन हैं लुडे2 पर डूबे नहीं। और कोई सतसंग में जाने की मना नहीं करते हैं। यहां कितना रोकते हैं। बाप ज्ञान देते हैं तुम बनते हो ब्रहमाकुमारियां और ब्रहमा कुमार। तुमको ब्राहमण तो जरूर बनना हैं। बाप हैं ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला तो जरूर हम स्वर्ग के मालिक होने चाहिए। हम यहां नर्क में क्यों पड़े हैं। यह पहले नम्बर में जो स्वर्ग में था सो अब आकर नर्क में पड़ा हैं। ख्याल में नहीं था यहां नर्क में हम क्यों पड़े हैं। अभी समझ में आता हैं। आगे हम भी पत्थर बुधि पुजारी थे। अभी फिर पूज्य बनते हैं 21 जन्मों के लिए। 63 जन्म पुजारी बने हैं। अभी फिर हम पूज्य स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह हैं ही नर से नारायण बनने की नालेज। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। पतितराजाएं पावन राजाओं को नमन करते हैं ना। हरेक राजा के महल में मंदिर जरूर होगा। वह भी राधे-कृष्ण का वा ल०ना० का। या राम सीता का। आजकल तो गणेश हनुमान आद की भी मंदिर बनाते हैं। भक्तिमार्ग में कितना अन्धश्रधा हैं। अभी तुम समझते हो बरोबर हम ने राजाई की फिर वाममार्ग में गये। अभी बाप समझाते हैं यह तुम्हारा अंतिम जन्म हैं। मीठे बच्चे पहले2 तुम स्वर्ग में थे। फिर उतरते2 पट में आये पड़े हो। तुम कहेंगे हम बहुत ऊंच थे, फिर बाप हमको ऊंच चढ़ाते हैं। हम हर 5000 बर्ष बाद पढ़ते ही आये हैं। उनको कहा जाता हैं वर्ल्ड की हिस्ट्री-जागराफी रिपीट। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाता हूं। सारे विश्व में तुम्हारे राज्य होंगे।

सारे विश्व में तुम्हारा राज्य होगा। गीत में भी हैं ना बाबा आप ऐसा राज्य देते हो जो कोई छीन न सके। अभी तो कितनी पार्टिशन हैं। पानी के ऊपर, ज़मीन के ऊपर झगड़ा चलता हैं। अपने अपने प्रांत की सम्भाल करते रहते हैं। न करे तो छोकड़े लोग पत्थर मारने लग पड़ेंगे। वह समझते हैं यह नवजवान पहलवान बन भारत की रक्षा करेंगे। सो हो पहलवानी अभी दिखाते रहते हैं। अंग्रजी के ऊपर कितना हंगामा किया हैं। बच्चे पूछते हैं अब हम क्या करें। कपड़ा दे देवें जैसे और सभी करते हैं। बाबा ने कहा हैं थोड़ा ठहरो तो सही। इनश्यूर करा दो। तुम डरते क्यों हो। प्यार से समझाओ। दुनिया की हालत देखो कैसी हैं। रावण राज्य है ना। बाप कहते हैं यह हैं ही आसुरी सम्प्रदाय। तुम अभी दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो। देवताओं और असुरों की लड़ाई कैसे होगी। तुम तो डबल अहिंसक बनते हो। वह हैं डबल हिंसक। देवताओं को भी डबल अहिंसक कहा जाता हैं। बाबा ने कहा हैं किसको वाचा से दुःख देना भी हिंसा हैं। तुम देवता बनते हो ना। तो हर बात में रायलिटी होनी चाहिए। खान-पान आद, न बहुत ऊंचा न बहुत हल्का। एक रस। राजाओं आद का बोलना बहुत कम होता हैं। प्रजा का भी राजा में बहुत प्यार रहता हैं। यहां तो देखो क्या लगा पड़ा हैं। कितना आन्दोलन हैं। बाप कहते हैं जब ऐसी हालत हो जाती है तब मैं आकर विश्व में शान्ति करता हूं। गर्वमेन्ट समझती हैं सभी मिल कर एक हो जायें। भल सभी ब्रदर्स तो हैं। परन्तु यह तो खेल हैं ना। बाप बच्चों को कहते हैं तुम कोई फिक्र नहीं करो। अनाज़ की तकलीफ हैं। अरे 9 वर्ष के अन्दर अनाज़ तो इतना हो जायेगा बिगर पैसे जितना चाहे उतना मिल सकता हैं। हम वह राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम हेल्थ को ऐसा बना देते हैं जो कब कोई रोगी होवे ही नहीं। गैरन्टी हैं। कैरेक्टर भी हम उन देवताओं जैसे बनाते हैं। जैसे2 मिनिस्टर होगा ऐसा ही समझा सकते हैं। युक्ति से समझाना चाहिए। परन्तु पत्थर बुधि समझते हो कहां हैं। ओपिनीयन में बहुत अच्छा बहुत अच्छा लिखते हैं परन्तु अरे तुम भी तो समझो ना। तो कहते फुर्सत नहीं। तुम बड़े लोग कुछ आवाज़ करेंगे तो गरीबों का भी भला होगा। बाप समझाते हैं अभी सब सिर के ऊपर काल खड़ा हैं। आज कल करते2 काल खा जावेंगा। तुम कुम्भकरण के मिशल बन पड़े हो। बच्चों को समझाने में बड़ा मज़ा भी आता हैं। बाबा ने हो यह चित्र आद बनवाई हैं। दादा को भी थोड़े हो यह ज्ञान था। तुमको वर्सा भी लौकिक और पारलौकिक बाप से मिलता हैं। अलौकिक बाप का वर्सा नहीं मिलता। यह तो दलाल हैं। इनका वर्सा नहीं हैं। प्रजापिता ब्रहमा को याद करना नहीं हैं। इसलिए बाबा फोटो भी निकालने नहीं देते। मेरे से तो तुमको कुछ भी मिलता नहीं हैं। मैं भी पढ़ता हूं। वर्सा है ही एक हद का, दूसरा बेहद का। प्रजापिता ब्रहमा क्या वर्सा देंगे। इसलिए इनका फोटो भी फालतू हैं। मुफ्त अपना अकल्याण करते हैं। बाप तो कहते हैं मामेकं याद करो। यह तो रथ है ना। रथ को तो याद नहीं करना हैं। बाबा कहते हैं फोटो देख कहां फंस न पड़े। ममा का भी चित्र रखने की दरकार नहीं है। परन्तु ममा के मुरीद भी तो हैं ना। वास्तव में तो ममा भी कहती थी बाप को याद करो। मेरे को याद करने से कुछ भी नहीं मिलेंगा। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। ऊंच ते ऊंच भगवान कहा जाता हैं। बाप आत्माओं को ही बैठ समझाते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती हैं। एक खल छोड़ दूसरा लेती हैं। जैसे सर्प का मिशाल हैं। ब्राहमणियां भी तुम हो। ज्ञान की भूं2 कर विश्व का मालिक बना देते हो। बाप जो विश्व के मालिक बनाते हैं ऐसे बाप को याद क्यों नहीं करेंगे। अब बाप आया हुआ हैं तो वर्सा क्यों नहीं लेना चाहिए। ऐसे क्यों कहते हो कि फुर्सत नहीं मिलती। अच्छे बच्चे तो सेकन्ड में समझ जाते हैं। बाबा ने समझाया है लक्ष्मी की पूजा करते हैं, अब लक्ष्मी से क्या मिलता हैं और अम्बा से क्या मिलता हैं। लक्ष्मी तो हुई देवता। उन से पैसे आद की भीख मांगते हैं। अम्बा तो विश्व का मालिक बनाती हैं। कामनाएं सब पूरी करती हैं श्रीमत द्वारा। अच्छा! बच्चों को याद प्यार गुडमार्निंग।